5 अगस्त 2024
मूल्य : 10.00 रुपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532

मासिक जागरण पत्रिका

14 अगस्त 1947 वह तारीख है, जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकता। एक तरफ देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्ति मिल रही थी। तो दूसरी तरफ इसकी कीमत देश के विभाजन के रूप में हमें मिली। भारतीय इतिहास का वह काला दिन आज भी हमारे हृदय को विचलित करता है।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पम्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाएं.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

- HIGH PERFORMANCE CHIP
- MULTIPLE PROTECTION
- AUTOMATIC RECOGNITION
- LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL
- PWN CHARGE
- SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 अगस्त 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 03
•••
श्रावण मास
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••
मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारत एक भूमि का टुकड़ा नहीं बल्कि साक्षात् जीवन्त माता का स्वरूप है। यह वात्सल्यमयी मातृभूमि है। किसी भी भारतवासी को माता का बंटवारा स्वीकार नहीं है। हमारे अनेक श्रद्धा के केन्द्र व तीर्थ स्थान आज भी पाकिस्तान और बांग्लादेश में हैं उनके बिना आज भी भारत अधूरा है। भारत माता का विभाजन राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक भोगौलिक और भावनात्मक दृष्टि से बिल्कुल भी सही नहीं है।

1947 में देश स्वतंत्र तो हुआ किन्तु यह स्वतंत्रता नहीं केवल सत्ता का हस्तांतरण था। पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर हमें कटा-फटा भारत मिला। भारत का विभाजन एक बहुत बड़ी दुखांत त्रासदी थी। यह भारत के साथ बहुत बड़ा विश्वासघात था। लार्ड माउण्टबेटन, पं. जवाहरलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना आदि ने करोड़ों भारतवासियों के भाग्य का निर्णय कर लिया। प्रश्न उठता है कि क्या विभाजन टाला जा सकता था? यह विभाजन के जिम्मेदार कौन हैं? विभाजन का मूल तुष्टीकरण एवं उस समय के नेतृत्वकर्ता के मन में राष्ट्र और संस्कृति के बारे में गलत धारणा थी। अंग्रेजों ने यह भ्रम फैलाया कि भारत कभी एक राष्ट्र रहा ही नहीं उन्होंने इसे एक राष्ट्र बनाया। दुर्भाग्य से हमारे नेताओं के मन में भी यह भ्रम पैदा हो गया। 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद नेताओं द्वारा दिये गये भाषणों से यह बात स्पष्ट होती है। महर्षि अरविंद ने कहा - विभाजन बना रहता है तो भारत गंभीर रूप से अशक्त हो सकता है, विकलांग भी हो सकता है, सदा ही गृह कलह की संभावना हो सकती है। जिस प्रकार से भी हो, जैसे भी हो, विभाजन समाप्त होना चाहिये। एकता आवश्यक है और प्राप्त की जानी चाहिये, क्योंकि भारत की भावी महानता इसी के गर्भ में छिपी है।

भारत विभाजन की विभीषिका - स्मरण व चिन्तन

डॉ. सुब्रतो गुहा

एक पुरानी कहावत है - **जो इतिहास की गलतियों से सीख नही लेते वे उन्हें दोहराने हेतु अभिशप्त होते हैं।** यही कारण है कि 14 अगस्त 1947 को भारत के विभाजन द्वारा पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान रूपी इस्लामी गणतंत्र के जन्म और उस प्रसंग में बीस लाख हिन्दू-सिख-बौद्ध आदि गैर मुस्लिम नर-नारी एवं शिशुओं की निर्मम हत्या, पाँच लाख से अधिक गैर मुस्लिम नारियों से दुराचार, पूर्वी एवं पश्चिमी पाकिस्तान के करोड़ों गैर मुस्लिमों के बलपूर्वक धर्मान्तरण अथवा शरणार्थी के रूप में भारत पलायन को मजबूर करने के खौफनाक कालखंड का आज भी स्मरण करते ही हम सिहर उठते हैं। हमने उन वीभत्स घटनाओं के फोटो एवं वीडियो देखे हैं जिनमें पाकिस्तान मुस्लिम लीग की जिहादी खूनी वाहिनी अंसार एवं रजाकार छोटे-छोटे शिशुओं को हवा में उछाल देते और नीचे हाथ में तलवार लिये खड़े रहते ताकि शिशु उस खुली तलवार पर गिरकर चीखते-कराहते एक अति पीड़ादायक मृत्यु की गोद में हमेशा के लिए सो जाता। **नारा-ए-तकबीर-अल्लाह-हो-अकबर एवं सर तन से जुदा** के गगनभेदी नारों के साथ ही नर-नारियों के सिर काटने और खून की धारा बहने के चित्र और वीडियो आज भी भारत सरकार के आर्काइव्ज़ में उपलब्ध हैं। पाकिस्तानी जिहादियों ने हिन्दुओं के खून से अपने चाकुओं और तलवारों की खून की प्यास बुझाने के साथ ही उनके मकान-दुकान-खेत-खलिहानों को आग के हवाले किया, गैर मुस्लिमों की सम्पत्तियों पर कब्जा किया तथा अत्याचार एवं क्रुरता की सभी सीमाएँ इस प्रकार लांघी कि शैतान की भी रूह कांप उठे।

आखिर पाकिस्तान के हिन्दू-सिख-बौद्ध अल्पसंख्यकों का क्या अपराध था कि उन्हें ऐसी भयानक सजा मिली ? स्पष्ट उत्तर है कि वे इस्लामी गणतंत्र पाकिस्तान में गैर मुस्लिम थे इसलिए उन्हें जीने का अधिकार नहीं मिल सकता था- सम्मानजनक जीवन जीना तो दूर की बात है। वैसे भारत विभाजन से पूर्व दिनांक 16 अगस्त 1946 को आने वाली विभीषिका की एक झलक मिली थी, जब स्वतंत्र पाकिस्तान की माँग ब्रिटिश सरकार के समक्ष रखते हुए मुस्लिम लीग के सर्वोच्च नेता मोहम्मद अली जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को **डायरेक्ट एक्शन डे** घोषित कर समूचे भारत में हिन्दू नरसंहार किया - अकेले कलकत्ता शहर में दस हजार हिन्दू नर-नारी एवं शिशु अतिक्रूरतापूर्वक मारे गए तथा तत्कालीन पत्रकारों ने समाचार पत्रों में लिखा कि कलकत्ता की नालियों में उस दिन पानी की जगह केवल खून बह रहा था। उस डायरेक्ट एक्शन डे के लिए मोहम्मद अली जिन्ना ने नारा दिया था - **हमें चाहिए विभाजित भारत या बर्बाद भारत।** इसके ठीक एक वर्ष बाद 14 अगस्त 1947 को भारत विभाजन द्वारा जिन्ना की विभाजित भारत की कल्पना साकार हो गई परन्तु बर्बाद भारत का सपना अधूरा रह गया - जिसे 1947 से आज तक भारत में जिन्ना के अनुयायियों द्वारा पूरा करने के प्रयास निरन्तर जारी हैं। इस संदर्भ में हमें याद है कैसे 09 फरवरी 2016 को 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर खूनी हमले के दोषी एवं फांसी पर टांगे गए मोहम्मद अफजल नामक पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादी की बरसी मनाने नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के जिहादी और वामपंथी विद्यार्थियों ने गगनभेदी नारे लगाए थे - **भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशाअल्ला इंशाअल्ला** तथा **भारत की बर्बादी तक, कश्मीर की आजादी तक, जंग चलेगी, जंग चलेगी।**

14 अगस्त 2024 को भारत विभाजन की विभीषिका का स्मरण करते हुए हम प्रण करते हैं कि हम भविष्य में अपनी मातृभूमि का कोई और विभाजन नहीं होने देंगे - और साथ ही अपने पूर्वजों के अखंड भारत का सपना भी पूरा करेंगे। अखंड भारत का क्षेत्रफल था 83 लाख वर्ग किलोमीटर जबकि वर्तमान खंडित भारत का क्षेत्रफल है 32 लाख 87 हजार वर्ग किलोमीटर - हमारा देश सिमटते-सिमटते लगभग एक तिहाई तक आ चुका है और कितना सिमटेगा ? अनेक भारतवंशियों के मन में प्रश्न उठता है कि अखंड भारत पुनः बनने की स्थिति में क्या पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश के खूनी जिहादी तत्व भारतीय नागरिक बनकर हमारे जीवन का सुख-चैन छीन लेंगे ? उत्तर है कदापि नहीं - अखंड भारत की नागरिकता पाने का अधिकार केवल उन्हें होगा जो अखंड भारत की सनातन अवधारणा में निष्ठा एवं विश्वास रखते हों - शेष सभी इस विशाल दुनिया में अपना ठिकाना तलाश कर लें। हमें प्रतीक्षा है उस सुनहरी सुबह की सूर्य किरणों की जब हम गर्व के साथ अखंड भारत की खुली हवा में सांस लेते हुए अखंड भारत माता की अखंड स्वरूप में आराधना करेंगे क्योंकि

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश से प्यार नहीं।।

देवी अहिल्याबाई होलकर: एक युगप्रवर्तक रानी

अधिवक्ता अरुंधती सिंह चंदेल

भारत का इतिहास एक समृद्ध चित्रपट है, जिसमें अनेक संघर्ष, आक्रमण और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। हिंदू सभ्यता ने भगवान के मंदिर के रूप में प्रकृति का सम्मान किया। बाह्य आक्रमण के दौरान भारत ने कई शताब्दियों तक तनाव, परिवर्तन और समर्पण की अवधि में जीवन बिताया - वीर रक्षात्मक प्रतिरोध और आक्रामक अधीनता के बीच, मराठों के उदय के साथ दक्कन में एक पुनर्निर्माण शक्ति की उम्मीद हुई। दक्कन से उत्पन्न आंदोलन ने आधी सदी के भीतर पूरे भारत में प्रभाव डाला। पहले चरण में छत्रपति शिवाजी महाराज और उनके वंशजों ने रक्षात्मक प्रकृति में जीवन यापन किया, जबकि दूसरे चरण में पेशवा बाजीराव प्रथम ने आक्रामक और मुखर रूप से कार्य किया। इस युग में एक दैवीय कृपा भी आई, जिसे ब्रह्मांड द्वारा चुना और आशीर्वादित किया गया था - देवी अहिल्याबाई होलकर, जिन्होंने प्रबुद्ध शासन, प्रशासनिक कुशलता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में विलीन होने का एक अद्वितीय उदाहरण स्थापित किया। एक ऐसे देश में जिसने वीरता की मूर्ति कई रानियों को देखा, देवी अहिल्याबाई होलकर की विरासत उनके 30 वर्षों के उल्लेखनीय शासनकाल के लिए अतुलनीय है, जिसने अनंत काल तक के लिए एक त्रुटिहीन छाप और प्रेरणा छोड़ी। उनकी अनगिनत उपलब्धियाँ, 18वीं शताब्दी में मौजूद मजबूत लैंगिक बाधाओं और मान्यताओं पर काबू पाकर नारी जाति की कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनीं। उनका युग 31 मई 1725 (सत्रह सौ पच्चीस) ई. को महाराष्ट्र के अहमदनगर के जामखेड के चौंडी गांव में आरंभ हुआ, जहां उनके पास कोई शाही वंश नहीं था, बल्कि उनका पालन-पोषण साधारण था, जो आध्यात्मिक विषयों में व्यापक परोपकारी प्रयासों का प्रतीक था। एक साधारण पृष्ठभूमि से असाधारण शासक तक, उन्होंने समाज में प्रतिस्पर्धी संस्कृतियों और नैतिकता के खुशहाल और सामंजस्यपूर्ण संयोजन का एक अनूठा उदाहरण स्थापित किया।

देवी ने अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही सात्विकता और विनम्रता की मिसाल पेश की। इसी वजह से बहुत कम उम्र में उनका विवाह खंडोजी (मल्हारजी के पुत्र) के साथ हो गया। युद्ध के मैदान में भाग्य ने लगातार मल्हारजी के साथ रहने का फैसला किया, लेकिन एक अप्रत्याशित घटना उन पर भारी पड़ी, जब 24 मार्च, 1754 (सत्रह सौ चौवन) को कुंभेर की घेराबंदी के दौरान तोप के गोले से खंडोजी की मृत्यु हो गई। इससे देवी निराशा और दुःख के चलते अवसाद में डूब गईं।

मल्हार राव के मार्गदर्शन से, निजी दुखों से ऊपर उठ देवी भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में उभरीं, उनकी क्षमता उजागर हुई, जिसने युग की कहानी को नया आकार दिया। उन्होंने अपने कार्यों, नीतियों और निर्णयों के माध्यम से धर्म और धार्मिकता के सिद्धांतों को मूर्त रूप दिया। उनके ससुर के निधन के बाद पेशवाओं द्वारा उन्हें होलकर परिवार के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता दी गई। उन्होंने समाज की भलाई के लिए कई परियोजनाएं शुरू करके अपने खालीपन को दूर किया, जिसमें मंदिरों (जो क्रुरता के अधीन हो गए थे), घाटों, कुओं, शैक्षणिक और स्वास्थ्य संस्थानों का निर्माण और नवीनीकरण शामिल था। 11 दिसंबर, 1767 (सत्रह सौ सड़सठ) को उन्हें इंदौर की रानी के रूप में विधिवत अधिकृत किया गया था। देवी की दानशीलता उनके अपने क्षेत्र के साथ-साथ पूरे भारत-खंड में इतनी प्रसिद्ध थी कि किसी विशेष टिप्पणी की आवश्यकता नहीं थी। जहां कहीं भी मंदिरों, घाटों, कुओं, शैक्षणिक और स्वास्थ्य संस्थानों का निर्माण या बिना नाम और बिना पंजीकृत भवन खड़े थे, वहां देवी ने अपना नाम अंकित कर लोगों को सुविधा देने का विचार किया।

भारतीय शासकों ने अपने कार्यों को अपने सीमित क्षेत्र के पवित्र स्थानों पर संरक्षण दिया, लेकिन कमोबेश उनका प्रांतीयकरण कर दिया गया था, देवी ने उनका **राष्ट्रीयकरण** कर दिया। उनके दृष्टिकोण से राष्ट्र की दृष्टि व्यापक थी और भले ही भारत भौगोलिक और राजनीतिक रूप से विभाजित था, देवी ने विजय या जबरदस्ती

का सहारा लिए बिना एकता हासिल की। देवी ने एक ऐसा भारत पाया था जो 10 शताब्दियों (830 ईस्वी से आगे) तक राजनीतिक, आध्यात्मिक और भौगोलिक रूप से विभाजित था। होलकर सरकार ने मान्यता प्राप्त करने से बचते हुए, विवेकपूर्वक काम किया, फिर भी **देवस्थान वर्गीकरण सूची** के तहत अपने धर्मार्थ प्रयासों के रिकॉर्ड को सावधानीपूर्वक बनाए रखा। उनके धर्मार्थ प्रयास मुख्य रूप से दो मुख्य पहलुओं पर केंद्रित थे-

क) पवित्र स्थलों और तीर्थस्थलों को पुनर्स्थापित और पुनर्जीवित करना।

ख) भारतीय वास्तुशिल्प पुनरुद्धार और विकास का समर्थन और प्रचार करना, उनके धार्मिक कार्य पर **राष्ट्रीय** का ठप्पा लगाने के लिए पर्याप्त है।

अभिलेखों से यह माना जा सकता है कि खासगी की आय भी समान गति रखती थी और व्यय भी। देवी नए जीते गए प्रांतों में और उसके आसपास अपनी चैरिटी स्थापित करने की कोशिश करती है। गया, बनारस, अयोध्या, पंढरपुर और जगन्नाथपुरी में उनके प्रयास उनके **पुनर्निर्माण** की प्रकृति के बारे में बताते हैं। यहां तक कि इमारतें भी मराठा आंदोलन के सहयोग से जागृत हुई **नई भावना** की चौकियों के बारे में बताती हैं। बनाए गए नए मंदिरों के चारों ओर विद्वान शास्त्री थे, जिन्हें भारत के सभी हिस्सों से आमंत्रित किया गया था और देवी द्वारा समर्थित किया गया था; और बदले में, वे हिंदू धर्म के सभी पहलुओं में मिशनरी के रूप में काम करते थे।

प्रार्थना, संयम और श्रम द्वारा चिह्नित जीवन के पाठ्यक्रम में थोड़ा बदलाव आया। प्रकृति, पालन-पोषण से चाहे जितनी भी मजबूत क्यों न हो, जीवन काल धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से अपने चरम पर पहुंच रहा था। श्रावण का हिंदू महीना व्रत और त्यौहारों के साथ आता है, जो देवी के लिए बहुत व्यस्त महीना था, 1795 ईस्वी के श्रावण की संध्या में बारह हजार आत्माओं को भोजन कराने और निर्धारित दान करने के बाद 70 वर्ष की आयु में देवी का शांतिपूर्वक और सचेत रूप से निधन हो गया। राज्य का कल्याण, अपनी निजी खुशियों के रास्ते में दर्द और रुकावटों से भरी जिंदगी में उन्होंने अनगिनत लोगों के जीवन में उत्साह और खुशियाँ लायीं।

अहिल्याबाई होल्कर, जिन्हें अक्सर दार्शनिक रानी के रूप में जाना जाता है, की तुलना अक्सर डेनमार्क की मार्गरेट प्रथम, इंग्लैंड की एलिजाबेथ प्रथम और रूस की कैथरीन द्वितीय जैसी ऐतिहासिक हस्तियों से की जाती थी। उनकी वीरता और महानता की मान्यता में, भारत गणराज्य ने 25 अगस्त 1996 को एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। उसी वर्ष, सरकार ने असाधारण सार्वजनिक हस्तियों को सम्मानित करने के लिए उनके नाम पर एक वार्षिक पुरस्कार की स्थापना की। इंदौर घरेलू हवाई अड्डे का नाम बदलकर अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा कर दिया गया और उनके सम्मान में इंदौर विश्वविद्यालय का नाम देवी अहिल्या विश्वविद्यालय कर दिया गया। मालवा और महाराष्ट्र में एक संत व्यक्ति के रूप में उनकी स्थायी प्रतिष्ठा, एक योद्धा रानी के रूप में उनकी भूमिका से परे, उनकी परोपकारिता की कालातीत प्रशंसा से प्रमाणित है। वे एक कर्मयोगी और एक राजयोगी के रूप में भी प्रतिष्ठित थीं। उनकी धर्मपरायणता, अपने लोगों के प्रति गहन चिंता, प्रशासनिक कौशल और देश भर में उनके द्वारा बनाए गए स्मारकों को आने वाली पीढ़ियों द्वारा कृतज्ञतापूर्वक याद किया जाएगा। प्रकृति के साथ उनका जुड़ाव, जो असीम लगता था, भविष्य के शासकों और शासन पर अपनी छाप छोड़ते हुए उनके साथ समाप्त हो गया। इस विरासत को किस हद तक बरकरार रखा गया है यह आत्मनिरीक्षण का विषय है।

लक्ष्मण-सुमित्रा संवाद

श्री पद्मनाभ तिवारी

मुख मलीन तब देख लखन का पूछी कुशल सुमित्रा माता।
कथा सकल समझाकर बोले वन जाते हैं मेरे भ्राता॥

हुई विवर्ण सुमित्रा, फिर धीरज धरकर सुत को समझाया।
तात तुम्हारी माँ वैदेही, राम पिता सम तुम पर छाया॥

जहाँ राम हैं वहीं अयोध्या, जहाँ सूर्य दिनमान वहीं है।
राम-जानकी यदि वन जाते, यहाँ तुम्हारा काम नहीं है॥

तुरत पुत्र तुम वन को जाओ, जीवन का यूँ लाभ उठाओ।
बड़े भाग्य यह अवसर आया, राम-चरण-सेवा मन लाओ॥

जिस प्रकार से राम-जानकी वन में कोई क्लेश न पावें।
जिस प्रकार से मात पिता परिवार नगर सुख को बिसरावें॥

उस प्रकार से यत्न निरंतर कर्म वचन मन से तुम करना।
तुमको कोई कष्ट न होगा, सीताराम-चरण मन धरना॥

वे योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं।

अमित राव पवार देवास

सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग यह बात चरितार्थ साबित हुई कि जब-जब धर्म की हानि और संसार में अत्याचार बढेगा, तब-तब मेरा जन्म होगा। **भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कही गई इस बात को हम हर एक युग में देख सकते हैं।** कहा जाता है, कलयुग में श्री कल्कि अवतार होना शेष है। द्वापरयुग में भगवान विष्णु के दसवें अवतार में से आठवें रूप श्रीकृष्ण का भाद्रपद मास कृष्णपक्ष की अष्टमी को तेज बारिश की रात 12 बजे मथुरा के कारागार में माता देवकी और पिता वासुदेव के यहां जन्म हुआ। भगवान ने मनुष्य जीवन में जब-जब जन्म लिए उन्हें कष्ट भी सहने पड़े। भगवान श्रीकृष्ण को जन्म लेते ही तुरंत अपने जन्म देने वाले माता-पिता से दूर लालन-पालन, पोषण और सुरक्षा की दृष्टि से गोकुल में यशोदा और नंदबाबा के यहां जाना पड़ा। आज परिस्थिति कैसी भी हो कोई भी मनुष्य अपनी संतान को जन्म के तुरंत बाद किसी और के पास नहीं छोड़ सकता। यह बड़ा प्रश्न भगवान श्रीकृष्ण के जीवन के पहले दुःख व कष्ट का रहा कि वे जन्म देने वाले अपने माता-पिता से कई वर्षों तक दूर रहे।

बाल्यकाल की अवस्था में ही अपने मामा कंस द्वारा भेजी गई, राक्षसी पूतना का आमना-सामना कर वध किया। बालपन में जाते हैं, तो यशोदा माँ अपने कन्हैया के लिए चिंतित दिखाई देती है जो मित्रों संग खेलते-खेलते अपनी गेंद कालिया नाग के पास फेंक देते हैं। फिर उससे सामना करना और विजय होना व अपनी गेंद वापस लाकर मित्रों को देना यह भी श्रीकृष्ण के जीवन का संकट ही था, जबकि बच्चों को हम छिपकली से भी दूर रखते हैं। थोड़ा और आगे चलें तो गोपियों संग मित्रता और माखन चोरी से खाना इसको दुनिया ने बहुत गलत तरह से प्रसारित किया। आज भी अनेक धारावाहिक द्वारा टेलीविजन पर इसे वास्तविकता से परे बताया जाता है। अनेक लोग खासतौर पर आज की युवा पीढ़ी उनके इस भाव से अनजान है। गोपियां तथा माखन इन्हें अतिप्रिय क्यों, इसका आश्रय यह हुआ कि बाल्यावस्था में सभी का चेहरा मनमोहक व आकर्षक ही होता है, इसलिए महिलायें-पुरुष, बड़े सभी उस बालपन की अवस्था में स्नेह और प्यार करते हैं। यही अर्थ हुआ गोपियों संग कान्हा के खेलने का, दूसरा माखन उन्हें बहुत प्रिय, जो व्यंजन हमें पसंद आते हैं हम वही अधिक खाते तथा यह भी ध्यान रखते हैं कि हमसे कोई मनपसंद व्यंजन मांग न ले। पूरे गांव में पता था कि कन्हैया को माखन पसंद है। अतः वे अपना माखन किसी को नहीं देते स्वयं मजे लेकर छुपाकर खाते। अपने प्रिय माखन, गोपियों, मित्रों और प्रेम रूपी राधा को भी छोड़कर एक दिन गोकुल से वे विदा ले लेते हैं। और फिर कभी अपने मूलस्थान पर लौट कर नहीं आते। आज हम मूलस्थान से रोजगार के लिए कहीं जाते हैं, तो हमें घर की याद और बचपन दिखाई पड़ता है। कितना कष्ट, बचपन की सभी यादें छोड़ अगले गंतव्य की ओर जब श्रीकृष्ण बढ़ते है, वहां भी उन्हें कष्ट ही सहना पड़ा। मनुष्य अपने प्रेम, मित्रों और प्रिय भोजन से दूर होकर शायद ही सुखी रह पाए यह विचारणीय पहलू कृष्ण के जीवन का हमें दिखाई पड़ता है। इतना ही नहीं फिर अपने मामा का वध, आगे महाभारत में धर्म की पुनर्स्थापना करने के लिए संघर्ष, युद्ध के मैदान से ही इस संसार को जीवन जीने की ऊर्जा प्रदान करते हुए अर्जुन को कुरुक्षेत्र में मार्गदर्शन देना। फिर आपस की अंतर्कलह को देखना, इतना सब खोकर भी आज के परिवेश में समाज उनको क्या सिर्फ और सिर्फ गोपियों संग रास रचाने वाला ही समझता है?

कोई मनुष्य अपना सब कुछ खोकर भी कैसे सुखी रह सकता है। यहां श्रीकृष्ण हमे सिखाते हैं कि मनुष्य जीवन में कर्म करे, फल विधाता के हाथों छोड़ देना है। कृष्ण का तो जन्म ही बुराइयों का अंत करने के लिए हुआ पर अवतार होने पर भी कष्ट, दुःख उन्हें सहना पड़े। चाहते तो महाभारत का युद्ध कुछ ही क्षण में समाप्त कर देते लेकिन उन्होंने वहां भी अपनी भूमिका सुनिश्चित की और बिना हथियार उठाये अर्जुन का सारथी बनना तय किया, जबकि वे स्वयं द्वारिका के राजा थे। यहाँ भी वे सिखा रहे, कर्म बड़ा या छोटा नहीं होता बस हमारी भूमिका का निर्वाह ईमानदारी से तथा समाज व लोककल्याण के लिए होना चाहिए। आज टेलीविजन, फिल्म, साधु-संत, महात्मा उपदेश देने वाले लोगों में समाज के कुछेक लोग उन्हें गलत तरीके से पेश करते नजर आते हैं उन्होंने तो स्वयं युद्ध के क्षेत्र में अर्जुन को पाठ पढ़ाया और कहा कर्म करो फल तुम्हारे हाथ में नहीं। वर्तमान में लोग खासकर युवा पीढ़ी उनके कुछ ही हिस्से को देख पा रहे हैं। उन्होंने भी मनुष्य जीवन लिया और इतना कुछ दुःख दर्द सहा। वे योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं, जो हम मनुष्यों को मैनेजमेंट अथवा जीवन जीने की कला सिखा रहे हैं।

भारत में रक्षाबंधन त्यौहार की भूमिका

डॉ. लखन रघुवंशी

रक्षा बंधन, जिसे अक्सर राखी भी कहा जाता है, भारत में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण और हृदयस्पर्शी त्योहार है। यह पारंपरिक हिंदू त्यौहार हिंदू महीने श्रावण की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो आमतौर पर अगस्त में पड़ता है। **रक्षा बंधन** शब्द अपने आप में त्यौहार का सार बताता है, जहां **रक्षा** का अर्थ सुरक्षा है और **बंधन** उस बंधन या धागे का प्रतीक है जो भाई-बहनों को एक साथ बांधता है।

सांस्कृतिक और भावनात्मक महत्व-

भाई-बहन के बंधन का उत्सव- रक्षा बंधन मुख्य रूप से भाई-बहनों, विशेषकर भाइयों और बहनों के बीच के अनूठे और अनमोल बंधन का उत्सव है। यह एक-दूसरे के प्रति प्यार, देखभाल और स्नेह व्यक्त करने का दिन है। यह त्यौहार भाइयों की अपनी बहनों की रक्षा और समर्थन करने की आजीवन प्रतिबद्धता को स्वीकार करता है।

राखी का प्रतीक - रक्षा बंधन के केंद्रीय अनुष्ठान में बहनें अपने भाइयों की कलाई पर एक सजावटी धागा (राखी) बांधती हैं। यह कृत्य अपने भाई की भलाई, खुशी और सुरक्षा के लिए बहन की प्रार्थना का प्रतीक है। बदले में, भाई अपनी बहनों की रक्षा करने का वादा करते हैं और उनके प्यार और प्रशंसा के प्रतीक के रूप में उपहार देते हैं।

भावनात्मक संबंध- राखी भौतिक दूरियों और समय क्षेत्रों से परे है। भले ही भाई-बहन भौगोलिक रूप से अलग-अलग हों, यह त्यौहार भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से फिर से जुड़ने का एक अवसर बन जाता है। राखी और उपहारों के आदान-प्रदान से निकटता और पुरानी यादों की भावना बढ़ती है, जिससे बचपन और साझा अनुभवों की अच्छी यादें ताजा हो जाती हैं।

पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाना - रक्षा बंधन सिर्फ भाई-बहन तक ही सीमित नहीं है। यह पूरे परिवार तक फैला हुआ है, जो पारिवारिक संबंधों की एकता और मजबूती का प्रतीक है। यह त्यौहार परिवार के सदस्यों को एक साथ आने, हँसी-मज़ाक, कहानियाँ साझा करने और पारंपरिक अनुष्ठानों में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है।

परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करना- राखी सांस्कृतिक विरासत का उत्सव है, जो पीढ़ियों से चली आ रही सदियों पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाजों को संरक्षित करती है। रक्षा बंधन से जुड़े अनुष्ठान सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के महत्व को मजबूत करते हुए, अपनी जड़ों से जुड़ने का एक तरीका है।

लिंग-समावेशी उत्सव- जबकि रक्षा बंधन में परंपरागत रूप से बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं, समकालीन उत्सव व्यापक परिप्रेक्ष्य को अपनाते हैं। बहनें सहेलियों और चचेरी बहनों सहित अन्य महिलाओं की कलाइयों पर राखी बाँधती हैं। यह समावेशी दृष्टिकोण महिलाओं के बीच एकजुटता को बढ़ावा देता है और आपसी सुरक्षा और समर्थन के महत्व पर जोर देता है।

मूल्यों का पोषण- रक्षा बंधन भाई-बहनों के बीच करुणा, सहानुभूति और जिम्मेदारी के मूल्यों को स्थापित करता है। भाई अपनी बहनों का सम्मान करना और उनकी देखभाल करना सीखते

हैं, जबकि बहनें सुरक्षा और कृतज्ञता का मूल्य समझती हैं। यह त्यौहार उन व्यक्तियों के पालन-पोषण में योगदान देता है जो स्वस्थ रिश्तों और आपसी सम्मान के महत्व को समझते हैं।

एकता का प्रतीक - राखी धार्मिक और क्षेत्रीय सीमाओं से परे है। विभिन्न पृष्ठभूमि और समुदायों के लोग त्यौहार मनाते हैं, जो विभिन्न समूहों के बीच एकता और सद्भाव को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व - इस पर्व का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व भी है। ऐसा कहा जाता है कि युद्ध में जाने से पहले रानियाँ राजाओं और योद्धाओं को राखी बाँधती थीं, जो एक सुरक्षात्मक बंधन का प्रतीक था। हिंदू पौराणिक कथाओं में, द्रौपदी

और भगवान कृष्ण की कहानी का अक्सर हवाला दिया जाता है, जहां संकट के क्षण में कृष्ण ने चमत्कारिक ढंग से द्रौपदी की साड़ी बढ़ाकर उसकी रक्षा की थी।

परोपकारी पहलू - कई रक्षा बंधन समारोहों में दान के कार्य शामिल होते हैं। बहनें सैनिकों, पुलिस अधिकारियों और यहां तक कि अजनबियों की कलाई पर राखी बांधती हैं, जो समाज की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने वालों के प्रति सुरक्षा और कृतज्ञता के बंधन का प्रतीक है। अंत में, रक्षा बंधन एक ऐसा त्यौहार है जो मात्र अनुष्ठानों से परे है; यह भावनाओं, मूल्यों और भाई-बहन के प्यार के सार का प्रतीक है। राखी का धागा सिर्फ एक भौतिक प्रतीक नहीं है; यह भाई-बहनों द्वारा साझा किए जाने वाले अविभाज्य बंधन का प्रतिनिधित्व करता है। यह त्यौहार पारिवारिक बंधनों, एकता और जीवन को सार्थक बनाने वाले पोषित संबंधों की ताकत का दर्पण है। अपने उत्सव के माध्यम से, रक्षा बंधन रिश्तों, प्यार और एक देखभाल करने वाले और एकजुट परिवार इकाई का हिस्सा होने के सार की पुष्टि करता है।

कैकयी के वचन....

शुभम स्वराज, सांवेर

प्रातः सूर्य उदय होते ही, सूर्यवंश में तम मांगा।
और प्रजा के पुलकित पावन, नयनों को भी नम मांगा।
पावन पुण्य धरा कौशल का, वैभव खोना मांग लिया।
चौदह साल तक कोप भवन, कलुषित कोना मांग लिया।
मांगा मैंने राज महल की, यशोपताका झुक जाए।
विधवापन मिल जाए मुझको, भूप की धड़कन रुक जाए।
प्राण भरत और स्वयं बीच, विच्छेदन को मांग लिया।
सौम्य सुत प्रिय राम के खातिर, वन वेदन को मांग लिया।
जनक नंदिनी सीता हेतु, पीड़ा मांगी बरसों की।
पुत्र लखन के लिए मांग ली, कठिन तपस्या अरसों की।
सबकी अंखियां ओझल मांगी, मांगा कौशल का क्रंदन।
कानन कालखंड तक मांगा, सम्पूर्ण प्रजा का स्पंदन।
युगों-युगों तक अपयश मांगा, तिरस्कार ही पाऊंगी।
कहो राम मैं जिजियों से अब, कैसे नजर मिलाऊंगी।
मैंने खुद को हवन कर दिया, तुमको धाम बनाने में।
सुनो राम मैंने क्या खोया, तुमको राम बनाने में।

अखंड भारत

यश पाटीदार

अखंड भारत एक अवधारणा है जो भारतीय उपमहाद्वीप को एक एकीकृत, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखती है। इस अवधारणा का उद्देश्य प्राचीन भारत को पुनः प्राप्त करना है जहां भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका और अफगानिस्तान जैसे देश एक सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत आते थे। प्राचीन काल में, भारतीय उपमहाद्वीप विभिन्न साम्राज्यों और राजवंशों के अधीन था, विशेष रूप से मौर्य, गुप्त, मुगल और मराठा राजवंश। इन राजवंशों ने पूरे क्षेत्र में एकता, सांस्कृतिक सहयोग और व्यापार संबंधों को बढ़ावा दिया। इसी तरह, भारतीय सभ्यता के साझा मूल्यों, धर्म, भाषा और परंपराओं ने इस क्षेत्र को एक विशिष्ट पहचान दी। सांस्कृतिक सद्भाव भारत की एकता की भावना का एक प्रमुख स्तंभ सांस्कृतिक सद्भाव है। भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न देशों की सांस्कृतिक परंपराएँ, त्यौहार, रीति-रिवाज और भाषाएँ बहुत समान हैं। चाहे दिवाली हो, ईद हो या बैसाखी, इन त्योहारों की खुशी पूरे क्षेत्र में समान रूप से मनाई जाती है। अखंड भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, जैन और अन्य धर्मों के अनुयायी एक साथ रहते थे। धर्मों की इस विविधता ने भारतीय उपमहाद्वीप को बहुलवादी जनसंख्या प्रदान की। धार्मिक सहिष्णुता और आपसी सेमान की भावना ने क्षेत्रीय पहचान को और मजबूत किया।

आज भारतीय उपमहाद्वीप राजनीतिक सीमाओं में बँटा हुआ है। भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे देश स्वतंत्र राज्यों के रूप में अपनी पहचान बनाए रखते हैं। हालाँकि, अखंड भारत का विचार अभी भी कई लोगों के दिलों में रहता है। यह अवधारणा शांति, सद्भाव और सांस्कृतिक सद्भाव को बढ़ावा देने का काम करती है। चुनौतियाँ और संभावनाएँ अखण्ड भारत के विचार को साकार करने में राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक मतभेदों सहित कई चुनौतियाँ हैं। बहरहाल, इस परिप्रेक्ष्य को सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यावसायिक सहयोग और शैक्षिक संबंधों के माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। अखंड भारत का विचार केवल क्षेत्रीय एकता की बात नहीं करता, बल्कि सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पुनरुत्थान का प्रतीक है।

विवादों की मेधा!!!

अमन व्यास

तथाकथित सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर को दिल्ली की साकेत कोर्ट ने 5 माह के कारावास और 10 लाख रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। मेधा पाटकर को यह सजा वर्ष 2000 में दिल्ली के वर्तमान उपराज्यपाल विवेक सक्सेना द्वारा दायर किए गए मानहानि मामले में हुई है।

❖ साकेत कोर्ट के मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट राघव शर्मा ने यह फ़ैसला सुनाया है। पाटकर और दिल्ली के एलजी दोनों ही साल 2000 से कानूनी लड़ाई लड़ रहें हैं। मेधा पाटकर ने अपने और नर्मदा बचाओ आंदोलन के खिलाफ़ विज्ञापन प्रकाशित करने के लिए सक्सेना के विरुद्ध मुकदमा दायर किया था। इसके बाद एक टीवी चैनल पर सक्सेना के खिलाफ़ अपमानजनक टिप्पणी करने और मानहानिकारक प्रेस बयान जारी करने के लिए दिल्ली के मौजूदा एलजी ने पाटकर के विरुद्ध दो मामले भी दर्ज कराए थे। वीके सक्सेना उस समय अहमदाबाद स्थित एनजीओ, नेशनल काउंसिल फॉर सिविल लिबर्टीज के प्रमुख थे।

❖ इसी तरह 2022 में मेधा पाटकर द्वारा संचालित नर्मदा नवनिर्माण अभियान के 12 न्यासी (ट्रस्टीज़) पर 2022 में मध्यप्रदेश के बड़वानी में एफआईआर दर्ज हुई थी।

❖ एफआईआर में इस बात के पर्याप्त प्रमाण दिए गए थे कि मेधा पाटकर के द्वारा इस ट्रस्ट के माध्यम से जीवन शालाएं और प्राथमिक विद्यालय संचालित करने के दावे किए जाते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि यह ट्रस्ट अवैधानिक रूप से धन प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।

❖ शिकायकर्ता ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि मेधा पाटकर अपने ट्रस्ट द्वारा जिन सामाजिक कार्यों को संचालित करने का दावा करती हैं वह केवल कागज़ पर ही संचालित हो रहे हैं।

❖ इसी रिपोर्ट में दावा किया गया कि मेधा पाटकर के एनजीओ को बड़ी मात्रा में धन प्राप्त हुआ और उसका लेखा-जोखा भी नहीं है। इसमें विदेश से एक ही दिन में 1.19 करोड़ रुपये प्राप्त होने का मामला भी है। इस मामले ने सर्वाधिक ध्यान आकर्षित इसलिए किया क्योंकि एक ही दिन में 20 अलग-अलग खाता नंबर से एक जैसी ही यानी 5,96,264 रुपये की राशि प्राप्त हुई थी।

दान का दुरुपयोग

नर्मदा से जुड़े क्षेत्र में पिछले कुछ समय से मेधा पाटकर का भारी विरोध हो रहा है। स्थानीय निवासी कहते हैं कि हो सकता है दान की राशि का उपयोग मेधा पाटकर द्वारा भारत विरोधी और हिंदू विरोधी गतिविधियों के लिए किया जा रहा हो, इसका कारण हाल ही के दिनों में पाटकर का भारत विरोधी आंदोलन में सम्मिलित होना और हिंदू विरोधी दंगों में मुस्लिम अपराधियों का साथ देना है।

❖ जब देश में नागरिकता संशोधन अधिनियम पास हुआ तो दिल्ली के निवासियों ने अधिनियम के स्वागत में एक रैली का आयोजन

किया, मेधा पाटकर ने वहाँ पहुँचकर अधिनियम का विरोध किया। हालाँकि नागरिकों ने मेधा पाटकर का ही विरोध किया।

❖ 2022 में जब खरगोन और सेंधवा में हिंदू विरोधी दंगा हुआ तब मेधा पाटकर, मुस्लिम वर्ग के घर गई और उनका समर्थन किया। बाद में पुलिस जाँच में सैंकड़ों मुस्लिमों को दंगा फैलाने के लिए गिरफ्तार किया गया।

❖ इसी तरह इंदौर के निकट मुस्लिम बहुल चाँदनखेड़ी गाँव में श्रीराम जन्मभूमि निधि समर्पण यात्रा पर जानलेवा हमले होने पर मेधा पाटकर गाँव में पहुँची और अपराधियों का समर्थन किया।

❖ लंबे समय से मेधा पाटकर का जनजातीय क्षेत्रों में लगातार विरोध हो रहा है। विरोध संगठित नहीं होने के कारण इसके स्तर का पता नहीं चल पा रहा लेकिन यह सच है कि बड़वानी समेत संपूर्ण नर्मदा क्षेत्र का जनजातीय वर्ग मेधा पाटकर का विरोध कर रहा है।

पानी एक अनमोल प्राकृतिक संसाधन है

डॉ.रत्नदीप निगम

पानी एक अनमोल प्राकृतिक संसाधन है। सभी जीवित चीजों को जीवित रहने के लिए पानी की आवश्यकता होती है। हम पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। चाहे वह जानवर हो या पौधे, प्रत्येक जीव को अपनी दैनिक चयापचय गतिविधियों को पूरा करे के लिए पानी की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी ग्रह पर जीवन पानी के कारण ही है। पानी के स्त्रोत मुख्यतः तीन है। वर्षा जल, भूजल और सतही जल जिसमें जलाशय नदियाँ, तालाक, झील, इत्यादी जल का महत्व निम्न कारणों से भी है।

1. घरेलू प्रयोजनों में, स्नान, सफाई, भोजन, कपड़े धोना, पीना
2. कृषि प्रयोजन में सिंचाई, खेती, बागवानी
3. औद्योगिक प्रयोजन - फैक्ट्रीयों में निर्माण के लिए
4. शरीर के लिए - शरीर के तापमान का नियंत्रण, पोषक तत्वों का परिवहन और अपशिष्टों का निष्कासन पृथ्वी पर 97 प्रतिशत पानी है लेकिन केवल 3 प्रतिशत जल ही पीने योग्य है।

हम सब जानते है कि पानी कितना आवश्यक है लेकिन इसका निर्माण नहीं किया जा सकता सिर्फ संरक्षण किया जा सकता है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त जल को हमने इतना प्रदूषित का दिया है कि पृथ्वी पर जल का संकट खड़ा हो गया है जिसके कारण अब घरेलू से लेकर राजनीतिक युद्ध होने लगे है। वैज्ञानिकों ने तो भविष्यवाणी की है कि अगला विश्वयुद्ध जल को लेकर ही होगा।

जल संरक्षण के उपाय - वर्षा जल संचय, तालाब निर्माण, खेत तालाब, नदियों के जल को प्रदूषण से बचाना, पौधारोपण इत्यादि।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

बाबा महाकालेश्वर की सवारी

डॉ. राजेश रावल 'सुशील'

भारत के हृदय प्रदेश, मध्य प्रदेश में प्रवाहमान मोक्षदायिनी माँ क्षिप्रा नदी के तट पर बसी इतिहास और आध्यात्मिकता की एक प्राचीन नगरी है उज्जैन। इस नगरी में व्रत, उत्सव, पर्व एवं त्यौहारों के साथ-साथ आस्था व परंपराओं को भी विधिपूर्वक हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इन्हीं उत्सवों में से एक है श्रावण एवं भादौ मास में निकलने वाली **बाबा महाकालेश्वर की सवारियां**।

श्रावण एवं भादौ मास में तीज-त्यौहारों के साथ-साथ बाबा महाकालेश्वर की शाही सवारी के दर्शन का अपना महत्व एवं आकर्षण है। इसके लिए गांव-गांव एवं नगर से आस्था का सैलाब उमड़ता है। क्योंकि बाबा महाकालेश्वर इस नगरी के राजाधिराज महाराज हैं और यही कारण है कि श्रावण-भादौ के महीने में अपने भक्तों का हाल-चाल जानने एवं उनके कष्टों को दूर करने हेतु नगर भ्रमण करते हैं। माता पार्वती स्वयं हरसिद्धि, गढ़कालिका एवं नगरकोट की महारानी बनकर तथा स्वयं बाबा काल भैरव सेनापति बनकर इस नगर की रक्षा करते हैं और चौरासी महादेव उनके चौरासी मंत्रालय हैं, जो भक्तों के सभी प्रकार के कष्टों का निवारण करते हैं। बारह ज्योतिर्लिंगों में उज्जयिनी के बाबा महाकालेश्वर का महत्व इसलिए भी अन्य तीर्थों से तिल भर अधिक है क्योंकि वे सिर्फ उज्जयिनी के नहीं वरन् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के महाराजाधिराज हैं। जहां काशी विश्वनाथ की नगरी में विराजमान चौरासी महादेव में से तिरयासी महादेव प्रकट एवं एक गुप्त रूप में विराजमान हैं वहीं उज्जयिनी में सभी चौरासी महादेव प्रकट रूप में विराजमान हैं।

महाकालेश्वर की सवारी की परंपरा का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। पौराणिक आख्यान के आधार पर देवशयनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु सारी सृष्टि का कार्यभार बाबा महाकालेश्वर को सौंप कर क्षीरसागर में शयन के लिए प्रस्थान करते हैं। इसी विशेष प्रयोजन के लिए बाबा महाकाल तीनों लोकों की प्रजा का हाल-चाल जानने निकलते हैं। देवशयनी ग्यारस के तीन दिन बाद श्रावण मास प्रारंभ हो जाता है। उज्जैन में निकलने वाली बाबा महाकाल की सवारी इन्हीं दैवीय व्यवस्थाओं का प्रतीक है। चार माह उपरांत जब देवउठनी ग्यारस (देव दीपावली) पर भगवान विष्णु शयन कर उठते हैं तब कार्तिक मास में बाबा महाकाल लाव-लश्कर के साथ श्री द्वारकाधीश गोपाल मंदिर पहुंच भगवान विष्णु को सृष्टि का कार्यभार पुनः लौटा देते हैं। इसे **हरिहर मिलन** के रूप में मनाया जाता है।

बाबा महाकालेश्वर की नगर भ्रमण यात्रा बैंड-बाजों के साथ शहर के मुख्य मार्गों से होकर गुजरती है। इस पालकी यात्रा में गणमान्य नागरिक, समाजसेवी, राजनेता, कलाकार, संगीतकार और नर्तक शामिल होते हैं। भगवान महाकालेश्वर को चांदी के रथ में बैठाकर शहर में घुमाया जाता है। इस रथ को कई प्रकार के फूलों से भी सजाया जाता है। लाखों श्रद्धालु भक्तगण, भजन मंडलियां एवं अखाड़े इस यात्रा में शामिल होते हैं। राजाधिराज बाबा महाकालेश्वर के दर्शन पाने के लिए भक्तों की भीड़ हफ्तों पहले से शुरू हो जाती है। जुलूस में शामिल होने वाले विभिन्न कलाकारों में भंडारी, नागा साधु, ढोल नगाड़े वाले, तलवारबाज़, घुड़सवार सिपाही भी शामिल होते हैं।

वैसे तो यह परंपरा अशोक और विक्रमादित्य जैसे सम्राटों के समय से निभाई जा रही है लेकिन 11वीं शताब्दी के आसपास, प्रसिद्ध परमार राजा, भोज के शासनकाल के दौरान इस अनुष्ठान को प्रमुखता मिली। राजा भोज ने इस परंपरा को बड़े रूप में करना शुरू किया था। वर्तमान समय में सवारी का पूजन -स्वागत- अभिनंदन शहर के बीचोंबीच स्थित गोपाल मंदिर में सिंधिया परिवार की ओर से किया जाता है जिसमें स्थानीय अधिकारी, मंदिर ट्रस्ट और उज्जैन के लोग इस प्राचीन परंपरा को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। सरकार और विभिन्न संगठन भी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में शहर के संरक्षण और विकास में योगदान देते हैं। उज्जैन में महाकाल की सवारी अखंड आध्यात्मिक विरासत की प्रतीक है, जो भक्तों को बाबा महाकालेश्वर के लौकिक स्वरूप में डूब जाने के लिए आमंत्रित करती है।

अयोध्या - विश्व का तीसरा शक्ति केंद्र

दुर्गेश कुमार साध

विश्व को अब तक दो शक्तियाँ प्रभावित कर चलाती आई हैं - एक **वेटिकन,** जो कि ईसाईयों का शक्तिपीठ है और दूसरा - **मक्का,** जो कि मुस्लिम सम्प्रदाय का आस्था केंद्र है। भारत देश बौद्धिक रूप से शक्ति संपन्न होने के बावजूद अब तक विश्व-शक्ति के केंद्र से लगभग दूर ही रहा, इसका कारण शायद यह रहा है कि हमारे पास अब तक वैटिकन और मक्का जैसे शक्तिपीठ नहीं थे, जो हमें शक्ति केंद्र बनने में मददगार हों या हम समेकित रूप से संगठित होकर एक दिशा में चला पाएँ। मगर देर-सबेर अयोध्या में जो प्रभु श्रीराम मंदिर बन गया है, वह निस्संदेह विश्व में हिन्दुओं की नई इबारत लिखेगा।

भारत में पूर्व से लेकर पश्चिम दिशा और सुदूर उत्तर से लेकर दक्षिण दिशा तक भगवान श्रीराम समान रूप से पूजे जाते हैं। सनातनी, भगवान श्रीराम को आराध्य और अपना आदर्श मानते हैं। राज्य की बात की जाए, तो **रामराज्य** एक आदर्श राज्य स्थिति है और भगवान श्रीराम की हम **राजाराम** के रूप में भी आराधना करते हैं। वे पुरूषों में सबसे उत्तम यानी **पुरूषोत्तम** कहे गये हैं। एक राजा, एक पुत्र, एक पति, एक भाई, एक मित्र यानी कि प्रत्येक संबंध में वे जहाँ एक आदर्श स्थापित कर गए हैं, वहीं शत्रुता में भी बैरभाव न रखकर उन्होंने रावण को भी अपनी भूल स्वीकार कर समझौते के अवसर प्रदान किया थे, जो उनकी महान उदारता को लक्षित करता है। चूँकि विधि ने रावण के लिए कुछ और ही सोच रखा था, इसलिए प्रभु श्रीराम ने उसका न्यायोचित संहार कर उसे भी मोक्ष प्रदान किया, जिसे रावण ने मृत्यु के पूर्व अपनी क्षमायाचना में स्वीकार भी किया था।

भगवान श्रीराम को लेकर कहीं पर भी हममें मतभेद नहीं है, इसलिए अयोध्या, जहाँ पर प्रभु श्रीराम का जन्म हुआ था, उससे बेहतर सनातनियों के लिए केन्द्रीकृत स्थान नहीं हो सकता था। कई लोग, अयोध्या केस में कोर्ट के फैसले से नाखुश थे और सोशल मीडिया पर जो लोग वहाँ पर अस्पताल बनवाने की बात को कहने से स्वयं को बुद्धिजीवी मान रहे थे, वे भी इस बात की अनदेखी ही कर रहे थे कि आने वाले समय में यह सनातन का एक **शक्तिपीठ** कहलाएगा। हम सनातनियों के पास आततायी आक्रमणकारियों ने वैटिकन अथवा मक्का जैसा कोई स्थान शेष नहीं छोड़ा था, जो हमें सतत् प्रेरणा देकर हमारा मार्गदर्शन करता रहे अतः यह सनातन धर्म के पास अंतिम अवसर था - अपने अस्तित्व को प्रकट करने का। अब दुनिया को पता चलेगा कि विश्व में कहीं हिन्दू भी रहते हैं, जिनमें पुनः विश्व-गुरू बनने का सामर्थ्य है। अब हमें हिन्दू अस्मिता को स्थापित करने के लिए और अधिक संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लोग दूर-दूर से भारत की सनातन सभ्यता को देखने के लिए आएंगें, जो उन्हें अयोध्या में दृष्टिगत होगी।

पश्चिम के लोग हमारे ज्ञान का चरबा बनाकर आज प्रगति कर स्वयं पर इठला रहे हैं और हम लुटे-पिटे से यह नज़ारा केवल देख-भर रहे हैं, क्योंकि बार-बार आक्रमणों ने हमारे ज्ञानपीठों को कुचल दिया गया और जब वही ज्ञान हमसे छीन कर कवर बदलकर बार-बार हमारे सामने आता है, तो हम विस्मृति के इतने अधिक शिकार हो जाने की वजह उसे पहचान भी नहीं पाते। बार-बार के आक्रमणों और स्वतंत्रता के पश्चात् की क्षुद्र और अदूरदृष्टिगत राजनीति के कारण हममें स्व-गर्व की भावना का लोप ही रहा, जिसे जाग्रत करने की महती आवश्यकता थी। एक समय भारत को **सोने की चिडिया** कहा जाता था। अंग्रेज़ों के आने के पूर्व हम अत्यंत सम्पन्न थे। हमें लूट-लूटकर विपन्न बनाया गया। हालाँकि आज पुनः हम विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं। हमारे सनातनी ग्रंथ महान हैं, हमारी संस्कृति विश्व में सदैव से उन्नत रही है, हमारा ज्ञान का लोहा विश्व ने माना है। आज हिन्दुओं के केन्द्रीयकरण का कोई स्थान अगर विश्व में कहीं पर दिखता है - तो वह केवल और केवल प्रभु श्रीराम की अयोध्या नगरी के अलावा कोई और स्थान नहीं हो सकता। हमें यह आशा करनी चाहिए कि हमें अयोध्या से न सिर्फ अध्यात्मिक बल मिले, बल्कि हमारी दिनचर्या में जीवनोपयोगी हर वह दिशा-निर्देश मिले, जिससे हम स्वयं के साथ इस राष्ट्र को परम् वैभव पर स्थापित कर सकें। विश्व में एक बार फिर से सनातन धर्म का लोहा मनवा सकें और विश्व को एक गुरू की तरह मार्गदर्शित कर सकें।

पुलिस का पेड़ों से लगाव

डॉ. ओ.पी.जोशी

- रमेश शर्मा
- प्रतापराव चन्द्र दिघावकर
- रामलाल प्रसाद
- आर. एस. जमीर
- देवेन्द्र सुरा

म.प्र. के पुलिस अधिकारी श्री रमेश शर्मा ने दमोह जिले के 28 पुलिस थाना व चौकियों के परिसरों की कुल 45 हेक्टर भूमि पर 1993 से 1996 के मध्य एक लाख से अधिक पौधे लगाकर उनकी देखभाल कर बड़ा किया। इससे उजाड़ व सूखे परिसरों में हरियाली फैल गई तथा पक्षियों का कलरव भी सुनाई देने लगा। उन्होंने यह कार्य किसी सरकारी आदेश के तहत नहीं अपितु बिगड़ते पर्यावरण को सुधारने की भावना से अपनी जिम्मेदारी समझकर किया। इस कार्य हेतु उन्हें 1996, 2000 तथा 2005 में क्रमशः इन्दिरा प्रियदर्शिनी, इंदिरा गांधी पर्यावरण तथा वृक्ष मित्र सम्मान दिया गया।

महाराष्ट्र में दक्षिण मुम्बई के तत्कालीन पुलिस उपायुक्त श्री प्रतापराव चंद्र दिघावकर ने 70 हजार पौधे लगवाये। दिघावकर अपने सहायक कर्मचारियों को नारियल, मीठा-नीम एवं नींबू आदि के पौधे देकर उन्हें उनके घर के आंगन में लगाने हेतु कहते एवं यह भी निर्देश देते थे कि घर के फालतू पानी से उनकी सिंचाई भी करें। दिघावकर ने 40 हजार वृक्ष कोल्हापुर में अपने सेवाकाल के दौरान उन समारोहों के आयोजकों द्वारा लगवाये जहां वे अतिथि बनकर जाते थे। 6 हजार वृक्ष मुम्बई के सेवाकाल में लगवाये। दिघावकर ने नाशिक एवं कोल्हापुर के आसपास पड़त भूमि पर भी हजारों पौधे लगवाये। केन्द्रीय वन व पर्यावरण मंत्रालय द्वारा उन्हें इंदिरा प्रियदर्शनी वृक्ष मित्र पुरस्कार प्रदान किया गया था।

पूर्वी चम्पारण (बिहार) के राजेपुर निवासी श्री रामलाल प्रसाद ने एल.एस. कॉलेज मुजफ्फरनगर से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्तमान में पुलिस की नौकरी के साथ उन्हें पेड़-पौधों से भी प्रेम है एवं पौधारोपण तथा पेड़ बचाने हेतु सजग हैं। पिछले कई वर्षों से वे पौधारोपण एवं उनकी देखभाल का अभियान चला रहे हैं। पुलिस की नौकरी में जगह-जगह जाना पड़ता है एवं इसी बीच वे उस जगह को भी ढूंढ लेते हैं जहो पौधे लगाकर देखभाल की जा सकती है। इन जगहों पर आसपास के लोगों से पौधारोपण करवाकर उन्हें देखभाल की जिमेदारी देते हैं।

सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी श्री आर. एस. जमीर नागालैण्ड की बंजर जमीन एवं उजड़े वनों में हरियाली स्थापित करने का अभियान स्थानीय लोगों की मदद से वर्ष 1994 से चला रहे हैं। सर्वप्रथम उन्होंने दीमापुर के पास स्थित लुझेटो गांव में पेड़ लगाना प्रारंभ किया क्योंकि यह उनका अपना गांव था। राज्य के दिवंगत मंत्री किये सेमा के साथ लुझेटो वेलफेअर सोसायटी की स्थापना भी की थी, जिसके सदस्य पौधे लगाने एवं वृक्षों को बचाने का कार्य करते हैं। नागालैण्ड के लोग जमीर को **ग्रीन मैन** के नाम से पुकारते हैं।

चंडीगढ़ पुलिस में कार्यरत सिपाही श्री देवेन्द्र सुरा को लोग **ट्री मैन** कहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में वे आसपास के 180 गांवों में डेढ़ लाख पौधे लगाकर उन्हें बड़ा भी कर चुके हैं। 20-25 लोगों का एक समूह उन्होंने बनाया है, जो उनकी इस कार्य में मदद करता है। चंडीगढ़ में उन्होंने दो एकड़ जमीन लीज पर लेकर पौधशाला तैयार की है ताकि पौधों की खरीदी की राशि बचायी जा सके। अपने वेतन का काफी पैसा भी वे इस कार्य में खर्च करते हैं।

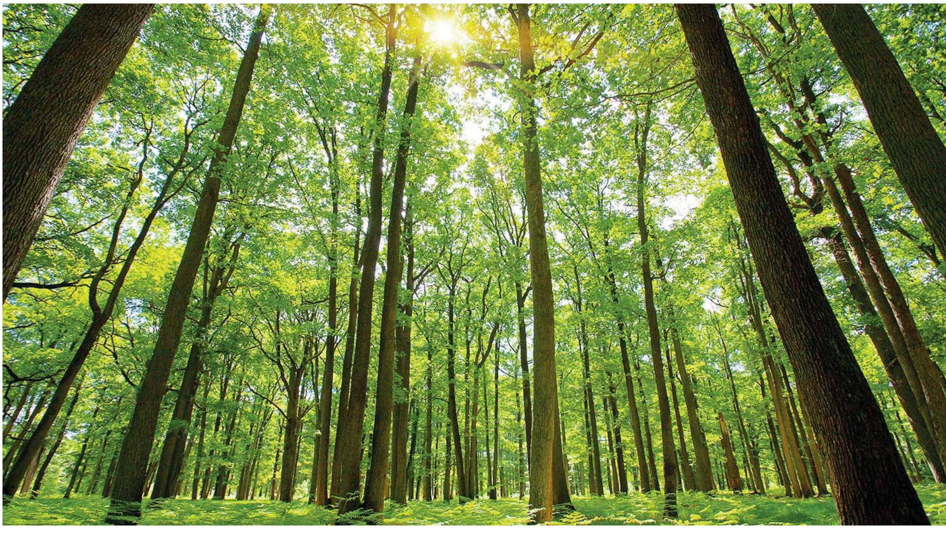

तकलीफ

डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ल

वह जूते पर पॉलिश करने में लगा था। उसने जूते को देखा। अभी चमक बाकी है। वह फिर ब्रश फेरने लगा।

''बाबूजी! सुना है ? तुम्हारा बेटा डिप्टी कलेक्टर है!''

'' यही तो मेरी तकलीफ है बाबा ! इससे तो अच्छा होता कि मैं उसे पेट काट-काट कर पढ़ाता ही नहीं। उसने तो हमसे रिश्ता ही खत्म कर दिया। अब वह अपने आपको ऊंचे कुल का समझने लगा है। जाति-बिरादरी के लोगों से उसने मिलना-जुलना बंद कर दिया है। बेटा यदि बाप को बाप नहीं समझे तो बेटे होने का क्या फायदा?''

वह देख रहे थे कि जूता तो चमक गया था लेकिन उसके चेहरे की चमक फीकी पड़ गई थी।

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उनके आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है?

उत्तर - दरियाई घोड़ा

राम चारों ओर हैं

पीयूष शर्मा

मर्यादा के दीप्ति पुंज, वो नम्रता के छोर हैं ।
काली अंधेरी स्याह रातों में, प्रभु मन भोर हैं ।।
मोह माया छल कपट का,जब तमस है व्यापता ।
नाम की लौ में प्रकटता,'राम' चारों ओर हैं ।।

प्रेम ऐसा सब जनों को, बांधता इक डोर से ।
क्या ही केवट अरु निषाद, शबरी के जूठे बेर से ।।
शीतल पवन सा स्पर्श जिनका, नाम मन को तारता ।
राम में जो रम रहे, आनंद हो चहूं ओर से ।।

धर्म जिनके साथ है, तिन प्रेम का अवतार हैं,
छल कपट, दुष्कामना पर, राम इक अंगार हैं ।।
एकाक्ष, मारिच, ताड़का, बाली का हो अनाचार भी,
शत्रु दमन हो शौर्य से, रघुवीर का व्यवहार है ।।

जब दशानन चल पड़ा था, युद्ध को अभियान से ।
श्री राम ने तब भी कहा था, आ शरण तू ज्ञान से ।
मोह माया और अहम के, मद में अंधा हो रहा,
श्री राम ने जब तीर मारा, तर गया संग्राम से ।।

राम जी तो औषधि हैं, जीव के संताप की ।
पी लिया तो पुण्य है, और है दवा हर पाप की।।
विश्व सारा राम में है, राम कण-कण में बसे,
श्री राम हमको थाम लो, हम हैं शरण बस आपकी ।।

प्राकृतिक खेती : परंपरा भी , जरूरत भी

पलक दुबे

धरती में इतनी क्षमता है कि वह अपने संसाधनों से सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लेकिन किसी के लालच को पूरा करने में वह सक्षम नहीं है।- महात्मा गांधी

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले हमारे देश में आज के परिप्रेक्ष्य में यह वाक्य जरूर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। किसानों के लिए उपलब्ध जमीन में कम लागत वाली प्राकृतिक खेती से, धरती के साथ संतुलन स्थापित करते हुए अच्छी पैदावार और गुणवत्ता वाली फसल लेना एक सर्वोत्तम विकल्प है। लेकिन बाजार में उपलब्ध विभिन्न कृषि रसायनों एवं दवाइयों के विज्ञापनों की चमक से भ्रमित किसान लालच का शिकार हो जाता है कि क्या उपयोग करे और क्या नहीं। आज कृषि में रसायनों के उपयोग के बिना एक आम किसान खेती की कल्पना ही नहीं करता। परिणामस्वरूप लागत बढ़ने और खेती से उचित लाभ न मिल पाना हमारे किसानों की प्रमुख समस्याओं में से एक है। फिर खेती लाभ का धंधा कैसे बने ? किसानों की आय कैसे दुगुनी होवे ?

कहा गया है न **जब समस्या बढ़े तो समाधान मूल की ओर लौटने पर ही मिलता है।** तो क्यों न फिर से हमारी प्राचीनता, हमारी परंपरा की ओर लौटते हुए प्राकृतिक खेती का रुख किया जाए। प्राकृतिक खेती, ये नाम आज कल बड़े ट्रेंड में है। जहां कहीं भी पर्यावरण संरक्षण, भूमि संरक्षण की बातें होती हैं, ये शब्द स्वतः ही पर्यावरण हितैषी उपायों की सूची में सामने आ जाते हैं। इसी तरह जैविक खेती, एग्रो इकोलॉजिकल फार्मिंग, बायोडायनामिक फार्मिंग, सस्टेनेबल फार्मिंग को भी हमने कभी न कभी सुना होगा। पर इनमें से हमने अपने आस-पास खेती की कौन सी विधि को प्रायोगिक रूप से होते हुए देखा है। हमारे यहां जो दृश्य है वह तो कुछ और ही है। रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग, दो से तीन रासायनिक दवाइयों को मिश्रित कर उनका लगातार छिड़काव। यहां किसान गलत नहीं अपितु बाध्य हैं इस प्रकार की खेती करने के लिए। कहीं पर्याप्त जानकारी का अभाव, तो कहीं कम उत्पादन से मिलने वाला भाव और कहीं अपने क्षेत्र के अन्य किसानों का प्रभाव। क्योंकि जाहिर सी बात है एक नए कदम की ओर बढ़ने के प्रयास में काफी सोचना पड़ता है, यही कारण किसानों को कहीं न कहीं रासायनिक खेती से दूर नहीं होने देते। लेकिन कहते हैं न **जहां चाह, वहां राह** तो इस बार हम प्राकृतिक खेती की अवधारणा को समझें और उससे जुड़ी भ्रांतियों को भी दूर करें और उसके बाद प्राकृतिक खेती को कैसे अपनाना है इसे भी जानें। प्राकृतिक खेती प्राकृतिक संसाधनों द्वारा की जाने वाली कृषि पद्धति है, जो देसी गाय के गोबर एवं गौमूत्र पर आधारित है। रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के उपयोग से रहित इस खेती का मूल उद्देश्य है कम लागत में उच्च पैदावार, जलवायु परिवर्तन से सुरक्षा तथा बेहतर गुणवत्ता और स्वास्थ्य की प्राप्ति। विशेषज्ञों के अनुसार, एक देसी गाय से प्राप्त गोबर एवं गौमूत्र 30 एकड़ तक खेती के लिए पर्याप्त है। अब सवाल यह आता है कि प्राकृतिक खेती या नेचुरल फार्मिंग में कम लागत का अर्थ क्या है। इस पद्धति में अंतरवर्तीय एवं मिश्रित खेती (एक ही समय में एक से ज्यादा फसलें लेना) को बढ़ावा दिया जाता है। मुख्य फसल का लागत मूल्य अंतरवर्तीय एवं मिश्र फसलों के उत्पादन से निकाल कर, मुख्य फसल का उत्पादन बोनस की तरह लिया जाता है। पूरे सीजन में फसलों के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता घर या खेत से ही सुनिश्चित करना, यही लागत को बहुत कम कर देता है। साथ ही फसलों को सिंचाई के लिए जरूरी पानी एवं बिजली की भी मौजूदा खेती की तुलना में 90% बचत होती है।

ये सब तथ्य पढ़ने एवं सुनने में तो संतोषप्रद है, लेकिन क्या वास्तविकता में ये पद्धति काम करती है। हां बिल्कुल और सकारात्मक रूप से अविश्वसनीय परिणाम भी देने वाली है। प्राकृतिक खेती का मुख्य आधार देशी गाय है तो इसके 4 शीर्ष स्तंभ अथवा संचालन चक्र भी है, जो अपृथक और समान महत्व के हैं, जो निम्नानुसार हैं - **1. बीजामृत, 2. जीवामृत, 3. आच्छादन, 4.वापसा**

1. बीजामृत - सामान्य खेती में भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बुवाई के पहले बीजों के उपचार को सर्वाधिक महत्व दिया गया है, क्योंकि खेती का आधार ही हैं बीज एवं मृदा। मृदाजनित रोगों, फफूंदों एवं जीवाणुओं से सुरक्षित बीज फसल की अच्छी गुणवत्ता और उत्पादन को प्रारंभिक अवस्था में ही निश्चित कर देते हैं। प्राकृतिक खेती में बीजों के संस्कार या संशोधन हेतु बीजामृत तैयार किया जाता है। जो देशी गाय के गोबर, गोमूत्र, चूना, पानी, खेत की मुट्ठी भर मिट्टी इन सभी सामग्री को मिला कर बनाया जाता है। इस तरह शोधित बीज का अंकुरण ज्यादा होता है व जड़ें तेजी से बढ़ती हैं।

2. जीवामृत - रासायनिक उर्वरकों में सबसे बड़ी कमी है कि उनमें उपस्थित तत्वों की संपूर्ण मात्रा का उपयोग पौधे नहीं कर पाते। क्योंकि रसायनों के लगातार उपयोग से मिट्टी में उन सूक्ष्मजीवों की संख्या में अत्यधिक कमी हुई है जो पौधों के लिए उपयोगी नाइट्रोजन,

फॉस्फोरस, पोटैशियम एवं अन्य पोषक तत्वों को जड़ों द्वारा ग्रहण करने हेतु उपलब्ध स्थिति (अवेलेबल फॉर्म) में लाते हैं। इन सूक्ष्म जीवों की कमी से हमें दोगुनी मात्रा में उर्वरक का प्रयोग करने पर भी परिणाम परिलक्षित नहीं होते।

इसी के विपरीत जीवामृत चमत्कारी परिणाम देने वाला है, जो कि सूक्ष्म जीवों का महासागर है। इसका निर्माण देशी गाय के गोबर, गौमूत्र, गुड़, बेसन, पानी एवं पेड़ के नीचे की मिट्टी सभी को उचित मात्रा में मिश्रित कर 7 दिन की किण्वन प्रक्रिया द्वारा किया जाता है। इसे समय समय पर सिंचाई के जल के साथ खेतों में दिया जाता है।

जीवामृत के लाभ -

1. पौधे को अधिक गर्मी एवं अधिक ठंड से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।
2. फूलों एवं फलों में वृद्धि।
3. सभी फसलों की बढ़वार में लाभकारी।
4. फल, सब्जी, अनाज की गुणवत्ता और स्वाद में वृद्धि।
5. भूमि में उपस्थित केचुओं को सक्रिय करना और उनकी संख्या में वृद्धि। ये सभी कारक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से फसल के अंतिम उत्पादन को कई गुना बढ़ा देते हैं।

3.आच्छादन - आच्छादन अर्थात् भूमि की ऊपरी सतह को ढकना जिससे कि भूमि की सजीवता और उर्वरा शक्ति संरक्षित रहे। आच्छादन एक सूक्ष्म वातावरण (माइक्रो क्लाइमेट) का निर्माण करता है, जो देसी केचुओं एवं सूक्ष्म जीवों की सुचारू गतिविधि के साथ मिट्टी की सतह पर स्थित ह्यूमस और मिट्टी की ऊपरी उर्वर पर्त को प्रतिकूल वातावरण से सुरक्षा देता है। वाष्पोत्सर्जन से होने वाली जलहानि को रोक कर नमी का संरक्षण, तापमान की स्थिरता एवं खरपतवारों का नियंत्रण करता है। इसमें मृदाच्छादन, काष्ठाच्छादन एवं सजीवच्छादन (अंतरवर्तीय एवं मिश्रित फसलों) द्वारा किया जाता है।

4. वापसा - पौधों को पानी जितना जरूरी है, उतना ही मिट्टी में हवा का संचरण। भूमि में मृदा के दो कणों के बीच की रिक्त जगह को पानी नहीं, अपितु 50% नमी एवं 50% हवा के सम्मिश्रण की जरूरत होती है। यही स्थिति वापसा कहलाती है। पानी की अत्यधिकता से इस स्थान में ऑक्सीजन की अनुपस्थिति से जड़ों एवं जीवाणुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, कभी कभार जड़ गलन की समस्या भी होती है। इसलिए प्राकृतिक खेती में पानी उतना ही दिया जाता है, जिससे जड़ो के आसपास नमी या वापसा रहे, न कि पानी भरे।

इन सभी मुख्य घटकों के अतिरिक्त प्राकृतिक खेती में विभिन्न प्रकार की इल्लियों एवं रस चूषक कीटों से फसलों और फलदार वृक्षों को बचाने हेतु नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्नि अस्त्र को नीम, गोबर, गौमूत्र, धतूरे, हरी मिर्च, लहसुन आदि से उचित विधि द्वारा बहुत ही सरल तरीके एवं नाम मात्र लागत में बनाया जाता है। जिसके कोई भी दुष्प्रभाव फल, सब्जी, अनाज पर नहीं पड़ता और यह शत प्रतिशत मानव उपभोग हेतु सुरक्षित होती है। रोगजनित फफूंदों की रोकथाम हेतु दशपर्णी अर्क दवा जो कि गोबर, गौमूत्र के साथ नीम, करंज, अरंडी, धतूरा, बेल, मढार, बेर, पपीता, बबूल, अमरूद, कनेर आदि के पत्तों को मिश्रित कर बनाई जाती है। प्राकृतिक कृषि में स्थिर कार्बन को बढ़ाने पर जोर दिया गया है, जो फसलों को सबसे अधिक लाभ प्रदान करता है। फसल कटाई के बाद शेष फसल अवशेष को खेत की मृदा में ही मिला दिया जाता है जो अगले सीजन को फसल को लाभ देती है। अब बात की जाए प्राकृतिक खेती को अपनाने की। तो पूरी तरह रासायनिक खेती छोड़ना शायद संभव नहीं। प्रत्येक किसान द्वारा जमीन के एक निश्चित भूभाग पर प्राकृतिक खेती को प्रारंभ किया जा सकता है, कम से कम अपने परिवार के उपभोग हेतु किया गया उत्पादन तो इसी पद्धति से हो। हां, शुरुआती कुछ 1-2 सालों में परिणाम हमारी अपेक्षा से कुछ कम हो सकते हैं। क्योंकि खेतों की मिट्टी सतत रसायनों के संपर्क में रही है। उर्वरकों के लगातार उपयोग के कारण मिट्टी में कठोरता आ जाती है और मिट्टी की प्राकृतिक शक्तियां और उर्वरता क्षीण हो जाती है। पर रसायनमुक्त खेती से कुछ ही वर्षों में मृदा में फिर से सजीवता आने लगेगी और परिणाम अविश्वसनीय होंगे, यह दावा है। धीरे-धीरे किसान स्वयं प्रोत्साहित होंगे और दूसरों के लिए भी प्रेरणा बनेंगे। इस प्रकार प्राकृतिक खेती के घटकों, उसके लाभों एवं परिणाम को परंपरागत खेती से तुलना करना उचित है ही नहीं। प्राकृतिक खेती में मिश्रणों के निर्माण की प्रक्रिया है, जो कि 100त्न रसायनविहीन फसल उपज देती है। ये वर्तमान समय की मांग है जहां कीटनाशी एवं खरपतवारनाशी के प्रयोग से मानव स्वास्थ्य पर बुरा असर हो रहा है और लोग कई प्रकार की खतरनाक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। खेती में उपयोग होने वाली ये रासायनिक दवाइयां जिस तरह मानव जाति के लिए धीमे जहर का काम कर रहीं वह दिन भी दूर नहीं जब रासायनिक खेती को पूरी तरह छोड़ना हमारी मजबूरी बन जाएगा। अतः इस लेख की सार्थकता तभी होगी, जब हम सभी रसायनों के दुष्प्रभावों के प्रति सजगता लाएं, जितने भी लोग इस लेख का पठन करें अगर वे कृषक वर्ग से हैं तो जरूर प्राकृतिक खेती अपनाएं और अन्य सभी पाठक भी इसके लिए खेती से जुड़े लोगों को प्रोत्साहित करें तथा मानव जाति के भविष्य, हमारी प्रकृति, पर्यावरण और धरती मां को सुरक्षित एवं संरक्षित करें।

भोजशाला पर प्रस्तुत रिपोर्ट से, हिंदू पक्ष का दावा और प्रबल हुआ

धार स्थित माँ वाग्देवी के मंदिर भोजशाला में, पुरातत्व विभाग द्वारा किये गए सर्वे की रिपोर्ट हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ में प्रस्तुत कर दी गई है। 2000 पन्नों की यह रिपोर्ट, याचिकाकर्ता और तीन अन्य पक्षकारों को भी दी गई। रिपोर्ट के आधार पर पक्षकारों ने यह बताया कि पुरातत्व विभाग को भोजशाला में कई हिंदू प्रमाण मिले हैं जो इस तथ्य को सिद्ध करते हैं कि यह भवन हिंदू स्थापत्य ही रहा होगा। रिपोर्ट में यह भी संकेत है कि वर्तमान में जो भवन कमाल मौलाना दरगाह के रूप में खड़ा है, यह मंदिर की संरचना पर ही बनाया गया था।

इस्लाम में कला और आकृतियों के लिए कोई स्थान नहीं है, अतः किसी मस्जिद या दरगाह में मानवाकृतियों या पशु पक्षियों की आकृतियों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। यही कारण है कि कमाल मौलाना मस्जिद बनाने के लिए उस स्थान पर पहले से बनी हुई देवी देवताओं की आकृतियों को खंडित करके विकृत कर दिया गया। हाँलाकि उत्खनन में कई देवमूर्तियां ऐसी भी मिली हैं जो सौभाग्यवश खंडित होने से बच गई, इनमें माँ सरस्वती, भगवान् विष्णु, नागराज वासुकि आदि देवताओं की मूर्तियाँ सम्मिलित हैं।

पक्षकारों के अनुसार सर्वे रिपोर्ट में संस्कृत और प्राकृत भाषा के शिलालेख मिलने का भी दावा किया गया है। जिनके आधार पर भोजशाला के ऐतिहासिक, साहित्यिक और शैक्षिक महत्व का पता चलता है। गर्भगृह के पिछले हिस्से में तो 27 फीट नीचे गहराई तक खुदाई करने पर दीवारों का ढांचा मिला है, जो यह सिद्ध करता है कि भोजशाला के वर्तमान भवन से पहले भी यहां एक प्राचीन भवन मौजूद था।अक्कलकुइया नाम से जाने जाने वाली विशाल बावड़ी में भी पुरातत्व विभाग ने सर्वे किया, जहां से कई हिंदू चिन्ह प्राप्त किए गए हैं।

स्तंभों और दीवारों के केमिकल ट्रीटमेंट के बाद उन पर विभिन्न देवी देवताओं की आकृतियां स्पष्ट हो चुकी हैं, जिनमें भगवान गणेश, ब्रह्मा जी, भगवान नरसिंह, भैरव और अन्य कई देवी देवताओं की आकृतियां सॅमिलित हैं तो वही स्तंभों पर जहां सीताराम, ॐ नमः शिवाय और ॐ सरस्वत्यै नमः जैसे मंत्र भी लिखे हुए दिखाई दे रहे हैं। मूर्तियों और शिलालेखों के अतिरिक्त सर्वे के दौरान कई प्राचीन सिक्के और तलवारें भी मिली हैं। वैसे तो सर्वे के पहले ही भोजशाला में पर्याप्त संख्या में हिंदू धर्म के प्रमाण मौजूद थे जिनके आधार पर यह कहना कठिन नहीं था कि यह एक हिंदू स्थापत्य है, किंतु सर्वे से प्राप्त प्रमाणों ने तो सत्य को शत प्रतिशत उद्घाटित कर दिया है। सर्वे की रिपोर्ट से एक बात स्पष्ट हो चुकी है कि भोजशाला के संबंध में हिंदुओं का दावा अब और प्रबल हो चुका है।

मालवा प्रान्त में पौधारोपण की लहर- इंदौर ने बनाया रिकॉर्ड

14 जुलाई को इंदौर के रेवती रेंज का नाम इतिहास में दर्ज हो गया। उस दिन इंदौर के नागरिकों ने मिलकर, पर्यावरण सुरक्षा की राह में वह कार्य कर दिखाया जो पीढ़ियों तक याद रखा जाएगा। इंदौर की विभिन्न संस्थाओं, नागरिकों और बीएसएफ के जवानों ने, साथ मिलकर एक ही दिन में **12 लाख 42 हजार पौधे** लगाकर विश्व रिकॉर्ड बना लिया। एक ही दिन में अधिकतम पौधे लगाने का कार्य करके इंदौर का नाम अब गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हो चुका है। यह इंदौर के लिए एक उपलब्धि तो है किन्तु पौधारोपण का यह कार्य वर्ल्ड रिकॉर्ड बना देने तक ही सीमित नहीं है। इंदौर के नागरिक अभी भी निरंतर पौधारोपण कर रहे हैं। इस अभियान के दौरान, कुल **51 लाख पौधे** लगाने का लक्ष्य लिया गया है। सफल होने पर यह अभियान, इंदौर की छवि बदल देने की क्षमता रखता है।

पौधारोपण को लेकर ऐसी जागृति केवल इंदौर तक ही सीमित नहीं है। प्रांत के विभिन्न क्षेत्रों में जागरूक नागरिक अपने-अपने स्तर पर पौधारोपण का कार्य कर रहे हैं। कुक्षी, महू, रतलाम, मलवासा, खातेगांव, कानवन, देवास, धार, झाबुआ, थांदला, बुरहानपुर, प्रीतम नगर, सीतामऊ, पिपलियामंडी, सोनकच्छ, फोफनार, शाजापुर इत्यादि जगहों से भी पौधारोपण करने, सीडबॉल बनाने और पौधे वितरण करने जैसे उत्साहवर्धक एवं सकारात्मक समाचार मिले हैं। स्पष्ट है कि पूरे प्रांत में, समाज पर्यावरण को लेकर के सचेत है और अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार पर्यावरण के संरक्षण और इसकी समृद्धि के लिए प्रयास कर रहा है।

पहचान के बहाने

साभार : मनोज कुरील

उत्तर प्रदेश मे शासन प्रशासन द्वारा एक आदेश जारी हुआ कि कांवड यात्रा के मार्ग में लगे दुकानदार अपनी दुकान पर अपना नाम लिंखेंगे। आशय बहुत ही स्पष्ट था कि दुकानदार कौन है? इस जानने के ग्राहक के अधिकार का संरक्षण। समाज में इस आदेश का स्वागत होना स्वाभाविक था। इससे प्रेरणा लेकर मध्यप्रदेश और उत्तराखंड में ऐसी पहल प्रारंभ हुई। कुछ लोगो ने राजनीतिक कारणों से इसका विरोध भी किया। पवित्र श्रावण माह में कांवड़ यात्री एक व्रत को धारण करते है, भोजन की शुद्धता, विचारों की शुद्धता और इस हेतु संयमित और संकल्प जीवन व्यवहार। हिन्दू समाज का बड़ा वर्ग श्रावण सहित कई व्रत-त्यौहारों पर माँसाहार से दूर रहता है। खानपान उसका निजी और प्रकृति प्रदत्त अधिकार है। ऐसे में वो किस दुकान से भोजन ले रहा है, ये जानने का उसको अधिकार है। कांवड यात्रा के मार्ग में उसे शुद्ध और शाकाहारी भोजन मिले, ये सरकार सहित पूरे समाज का भी दायित्व है। इसीलिये विभिन्न धार्मिक यात्राओं के मार्ग में रामरसोड़े और भंडारों की परंपरा हमारे यहाँ रही है।

कांग्रेस और समाजवादी पार्टी सहित कई राजनीतिक पार्टियों ने इसका विरोध किया। उनका कहना है कि इससे मुसलमानों का पहचान उजागर होगी। उनके इशारों पर कुछ लोगों ने सर्वोच्च न्यायालय में इस आदेश के विरोध में याचिका दायर की, सर्वोच्च न्यायालय ने इस आदेश पर अंतरिम रोक भी लगा दी है। पिछले दिनों हम सबने ऐसे कई घटनाक्रम देखे है, जिसके आधार पर हमें अपने सेवाप्रदाता को जानने का पूरा अधिकार मिलना चाहिये। पुणे में खाद्य पदार्थों में मांस मिलना, बड़ौदा में शाकाहारी भोजन में गोमांस मिले होने के समाचार भी पढ़ने को मिले है। माँस खाना किसी का अधिकार हो सकता है, तो शाकाहारी होना भी व्यक्ति का नितांत प्रकृति प्रदत्त अधिकार है। खरीदी-बिक्री दो पक्षों की मामला है, तो ग्राहक को किसी प्रकार की बाध्यता क्यों ? उसे भी अपने सेवाप्रदाता को जानने का पूरा अधिकार होना ही चाहिये।

साभार मनोज कुरील

कांग्रेस के नेता कह रहे है कि इससे मुसलमानों की पहचान उजागर होगी। इस बात में दुर्भावना से अधिक कुछ नही। मुसलमान इस देश के नागरिक है, उनकी पहचान भारतीय के रूप में है। जब सरकारें धार्मिक आधार पर विशेष प्रावधानों की व्यवस्था करती है, अल्पसंख्यक कल्याण की योजनाओं का मुसलमान पूरा लाभ उठाते है, तो पहचान उजागर होने से खड़ी होने वाला संकट काल्पनिक है। हम जो है, हमें वैसे ही व्यक्त होना है। ये सत्यनिष्ठ भी है। इसलिये मुसलमान होकर हिन्दू नाम से दुकान चलाना, ये ईमान के भी खिलाफ है। कांवड यात्रियों सहित जो भी शाकाहार व्रत का धारण किये हो, उनकी आस्था और विश्वास की रक्षा का कर्तव्य पूरे समाज को है। सेकुलिज्म के नाम पर मुंबई में पर्युषण में जैन मंदिर के सामने मांस की दुकान लगाना, केरल में चौराहे पर गाय काटना सिर्फ़ सहिष्णु हिन्दू समाज का अपमान है।

जातिवाद का ज़हर फैलाने वाले और जातिगत अहंकार के नाम पर संघर्ष कराने वाले एक तरफ हिन्दू समाज को तोड़ने पर आतुर है, तो दुकान के पर नाम लिखने को मुसलमानों की पहचान का प्रश्न बना रहे है। हिन्दू समाज को आगे आकर ऐसे कृत्यों का प्रतिकार करना चाहिये। हमें अपनी पहचान पर गर्व है, अपने नाम, अपनी वेशभूषा, अपनी भाषा और अपने प्रतीकों को सगर्व अंगीकार करके सामूहिक रूप से हिन्दू चेतना को प्रकट करना चाहिये।

महाकाल शाही सवारी उज्जैन

सितम्बर माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 06 हरितालिका तीज
ता. 09 श्री गणेशोत्सव
ता. 11 ऋषि पंचमी
ता. 16 डोल ग्यारस
ता. 19 अनंत चतुर्दशी

बुक-पोस्ट

जाग्रत मालवा

प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341